



OK  
2/8

# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 47] नई दिल्ली, शनिवार, नवम्बर 24, 1984 (अग्रहायण 3, 1906)  
No. 47] NEW DELHI, SATURDAY, NOVEMBER 24, 1984 (AGRAHAYANA 3, 1906)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

### विषय सूची

पृष्ठ	पृष्ठ
भाग I—खंड 1—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांख्यिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं	821
भाग I—खंड 2—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) द्वारा जारी की गयी सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	1455
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांख्यिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं	—
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गयी सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	1851
भाग II—खंड I—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*
भाग II—खंड 1—क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*
भाग II—खंड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के विम तथा रिपोर्ट	*
भाग II—खंड 3—उप-खंड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संचालित क्षेत्रों के प्रशासकों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांख्यिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	*
भाग II—खंड 3—उप-खंड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संचालित क्षेत्रों के प्रशासकों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांख्यिक आदेश और अधिसूचनाएं	*
भाग II—खंड 3—उप-खंड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संचालित क्षेत्रों के प्रशासकों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांख्यिक नियमों और सांख्यिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी में प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खंड 3 या खंड 4 में प्रकाशित होते हैं)	*
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांख्यिक नियम और आदेश	*
भाग III—खंड 1—उच्चतम न्यायालय, महान्यायाधीश, संघ लोक सेवा आयोग, रेलवे प्रशासकों, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों पर जारी की गयी अधिसूचनाएं	28031
भाग III—खंड 2—पेंशन कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं और नोटिस	965
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अध्यापन द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं	—
भाग III—खंड 4—विभिन्न अधिसूचनाएं जिनमें सांख्यिक विभागों द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	2963
भाग IV—नैर-सरकारी व्यक्ति और नैर-सरकारी निवासों द्वारा विज्ञापन और नोटिस	179
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के अधिकारों के विषये बाका अनुसूचक	*

\*पृष्ठ संख्या प्राप्ता नहीं हुई।

## CONTENTS

	PAGES		PAGES
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Resolutions and Non Statutory Orders issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) ..	321	PART II—SECTION 3—Sub-Sec. (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) on General Statutory Rules & Statutory Orders (including bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India including the Ministry of Defence) and by General Authorities (other than Administrations of Union Territories) ..	*
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) .. .. .	1455	PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence .. ..	*
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence .. .. .	—	PART III—SECTION 1—Notifications issued by the Supreme Court, Auditor General, Union Public Service Commission, Railways Administrations, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India .. .. .	28031
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence .. .. .	1851	PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, Calcutta .. ..	955
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations .. .. .	*	PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners ..	
PART II—SECTION 1-A—Authoritative text in the Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations .. .. .	*	PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies ..	2961
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills .. .. .	*	PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies .. ..	179
PART II—SECTION 3—Sub-Sec. (i)—General Statutory Rules (including orders, bye-laws, etc. of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) .. .. .	*	PART V—Supplement showing statistics of Birth and Deaths etc, both in English and Hindi ..	*
PART II—SECTION 3—Sub-Sec. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) .. .. .	*		

## भाग I—खण्ड 1

## [PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली दिनांक 12 नवम्बर 1984

सं० 108-प्रेज/84—राष्ट्रपति तमिल नाडु पुलिस के निम्नांकित अधिकारी की उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं —

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री अरुमुगम चोकनिगम,  
पुलिस उप-निरीक्षक,  
रामनाथपुरम् पश्चिम जिला,  
(तमिलनाडु)।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

31 अगस्त, 1981, की रात को श्री 1 सितम्बर 1981 को प्राप्त सतूर घाता के पुलिस निरीक्षक ने एक अपराधी मरीमूथ का गिरफ्तार करने के लिए, उप-निरीक्षक अरुमुगम चोकनिगम और अन्य के एक दल के साथ छापा मारने का आयोजन किया। जब निरीक्षक, अरीपनी गाँव की छानबीन कर रहे थे तो अभियुक्त मरीमूथ जो गाँव में छिपा हुआ था अपने दोस्त के साथ अचानक गाँव की उत्तर-पूर्वी दिशा में दिखई दिया और मुख्य गली गाँव की तरफ भागा। निरीक्षक चोकनिगम ने लगभग 3 किलोमीटर की दूरी तक अभियुक्त का पीछा किया। अभियुक्त मरीमूथ अचानक पीछे मुड़ और अचानक ने हतियार लिया जिससे जवानों की घबराहट हुई और आँखों पर जेट आई। अभियुक्त ने उप-निरीक्षक को मारने के उद्देश्य से टून टून पर फ़िराया। उस समय श्री चोकनिगम ने अपने धरमों की परवाह न करते हुए आत्म-रक्षा के अपने विचारों से फायदा किया जिसके परिणामस्वरूप अभियुक्त मरीमूथ गिर गया और घटनास्थल पर मर गया।

इस प्रकार श्री अरुमुगम चोकनिगम, पुलिस उप-निरीक्षक, ने उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस, बड़े निष्पक्ष और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 1 सितम्बर, 1981 से दिया जाएगा।

सं० 109-प्रेज/84—राष्ट्रपति दिल्ली पुलिस के निम्नांकित अधिकारी की उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं —

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री काली चरन  
हैड कांस्टेबल नं० 560/उत्तर,  
दिल्ली।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

21 नवम्बर, 1983, को श्री काली चरन, हैड कांस्टेबल, दिल्ली में विशाल सिलेमा पर ड्यूटी पर थे। उन्होंने देखा कि विशाल सिलेमा के खजाने की दो युक्तियों में दबाव लगाया था, जिनमें से एक के हाथ में रिवाल्वर था। अपने जीवन की परवाह न करते हुए श्री काली चरन उस पर झपट पड़े। अभियुक्त ने उन पर गोली चलायी लेकिन निजाना चूक गया। हैड कांस्टेबल काली चरन यह

जानने के बावजूद कि उनके जीवन का गंभीर खतरा था उससे हाथपाई करते रहे। अपराधी ने दूसरी गोली चलायी जो हाथपाई के दौरान फिर हैड कांस्टेबल को लगने से चूक गई। श्री काली चरन ने मानसिक सम्बलन नहीं खोया और 11 पुलिस कर्मियों की मदद से दोनों अपराधियों को काबू करने में सफल हो गये। इस प्रकार श्री कालीचरन ने न केवल एक नागरिक का जीवन बचाया बल्कि संप्रसार अपराधियों द्वारा बिन-बहाड़े लूटपाट की घटना को होने से भी सफलतापूर्वक रोका।

श्री काली चरन, हैड कांस्टेबल, ने उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 21 अगस्त, 1983 से दिया जाएगा।

सं० 110-प्रेज/84—राष्ट्रपति बिहार पुलिस के निम्नांकित अधिकारी की उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं —

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री शम्भु शंकर ठाकुर,  
आरक्षी उप-निरीक्षक,  
आरा,  
मवावा (बिहार)।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

22 जुलाई, 1982, को लगभग 2000 बज श्री शम्भु शंकर ठाकुर, उप-निरीक्षक, जब सहायक दल के एक सेक्शन के साथ गश्त लगा रहे थे तो उन्हें सूचना मिली कि डाकुओं का एक गिरोह अनेक पुलिसियों के पास आरा मुख्य नगर पर डाका डाल रहा था। श्री ठाकुर ने बाहन को एक तरफ खड़ा कर दिया और सहायक दल के अपने सेक्शन के साथ पूर्ण अग्रधार में नगर की ओर पैदल गए। कुछ ही क्षणों में पुलिस दल उस स्थान पर पहुंचा जहाँ डाकू गालियों की लूटपाट करने के लिए इंतज़ार कर रहे थे। डाकुओं की संख्या लगभग 8-10 थी। डाकुओं ने पुलिस दल पर टीचों की रोशनी डाली और उनका परिचय पूछा। श्री शम्भु शंकर ठाकुर ने पुलिस दल के नेता होने के नाते उत्तर दिया कि वे पुलिस के जवान हैं। यह सुनकर डाकुओं ने पुलिस दल पर गोली चलाई। श्री ठाकुर ने अपराधियों की धमकी को साहस के साथ स्वीकार किया और अपने जवानों को जवाबी गोलीबारी का आदेश दिया। इस प्रकार दोनों दलों में गोलीबारी हुई। श्री ठाकुर ने गोलीबारी का निर्भयता से सामना किया और यहाँ तक कि अपने अर्धशत अधिकारी का रिवाल्वर लेकर कुछ गोलियाँ चलायीं जिसके परिणामस्वरूप डाकू राजेंद्र शर्मा की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गयी जबकि शेष डाकू भाग निकले। अपने जीवन की खतरों में डालकर श्री ठाकुर ने अपने साथियों के साथ अपराधियों का पीछा किया तथा दो और डाकुओं को पकड़ा। एक देशी अग्नेस्त्र, 2 कारमग और 1 गैरी गयी, सम्पत्ति डाकुओं से बरामद की गयी।

इस मुठभेड़ में श्री शम्भु शंकर ठाकुर, उप-निरीक्षक, ने उत्कृष्ट वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 22 जुलाई, 1982 से से दिया जाएगा।

सं० 111-प्रेज/84—राष्ट्रपति असम पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं—

अधिकारियों का नाम तथा पद

श्री उदय दाम,  
कान्स्टेबल सं० 380,  
कार्यकारी बल,  
जिला-गोलपाड़ा,  
(असम) ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया ।

4 मार्च, 1984, को प्रातः लगभग 8.0 बजे बोंगई थाने को यह सूचना मिली कि आर० पी० एस० एफ० का एक रक्षक पूरी बर्दी में बोंगई कब्जे में महावीर स्थान मन्दिर के अन्दर से अहाँ भक्तों की एक भीड़ जलूम निकालने के लिए जमा थी, एक राइफल और गोलाबाद से अधाधुध गोलियाँ जलाकर भय और आतंक पैदा कर रहा था । श्री वीरेन्द्र कुमार हजारीका बोंगई थाने के उप-निरीक्षक, छः पुलिस अधिकारियों/कर्मियों (कान्स्टेबल उदय दाम सहित) के साथ घटनास्थल की ओर गए । पुलिस दल को भागते हुए लोगों से मालूम हुआ कि आर० पी० एस० एफ० का रक्षक हिंस्रतापूर्ण हो गया । उससे केवल मन्दिर का केयर टेकर श्री राम नारायण यादव ही बच कर सकना था और पुलिस दल को देखकर रक्षक हिंस्रतापूर्ण कार्य कर सकता था । उप-निरीक्षक हजारीका के आदेश के अनुसार कान्स्टेबल उदय दाम ने बर्दी उतारदी तथा सिविल पोषाक पहन ली और आर० पी० एस० एफ० के रक्षक पर निरन्तर नज़र रखकर सावधानी पूर्वक उसके पास पहुंचे । रक्षक ने जो भीड़ पर गई बार अधाधुध गोलियाँ जला चुका था, मन्दिर से बाहर आया और हवा में एक और राउण्ड गोली चलायी और मन्दिर के परिसर में हट्टों के छेरे के पीछे मौका समाल लिया । दूसरी तरफ उप-निरीक्षक हजारीका ने अपने जवानों के साथ पहले से मोर्चा संभाल रखा था । श्री उदय दाम पीछे से रक्षक के पास पहुंचे । उन्होंने देखा कि रक्षक ने अपनी राइफल खोल ली और उसे फिर से भरने की काशिश कर रहा था । घात लगाकर प्रतीक्षा कर रहे पुलिस दल को श्री उदय दाम ने सूझबूझ से संकेत दिया और वह स्वयं रक्षक पर झपट पड़े तथा उसे पकड़ लिया । रक्षक जमीन पर गिर गया और तुरन्त श्री हजारीका के नेतृत्व में अन्य पुलिस कर्मियों ने उसे फाड़ मे कर लिया । फिर आर० पी० एस० एफ० के रक्षक को हिरामत में ले लिया गया और उसके कब्जे में एक 303 राइफल (मार्क IV) 18 बालू कारतूस, 5 चार्ज्ड क्लिप्स सहित 5 खाली कारतूस बरामद किए गए । घात में आर० पी० एस० एफ० के रक्षक की पहचान करने पर मालूम हुआ कि वह आर० पी० एस० एफ० की 4 बटालियन की एक कम्पनी का बूज विनाश था ।

इस प्रकार श्री उदय दाम, कान्स्टेबल, ने उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 4 मार्च, 1984 में दिया जाएगा ।

सं० 112-प्रेज/84—राष्ट्रपति पश्चिम बंगाल पुलिस के निम्नांकित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं—

अधिकारियों के नाम तथा पद

श्री बी० के० मेहता, (मरणोपरान्त)  
पुलिस उप-आयुक्त,  
पोर्ट डिविजन,  
कलकत्ता ।  
श्री मुख्तियार अली, (मरणोपरान्त)  
कान्स्टेबल सं० 17979,  
पोर्ट डिविजन,  
कलकत्ता ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया ।

18 मार्च, 1984, को श्री बी० के० मेहता, पुलिस उप-आयुक्त को थाना गार्डन रीच के अन्तर्गत फतेहपुर-रामनगर क्षेत्र में साम्प्रदायिक स्वरूप के एक गम्भीर बंगे की सूचना प्राप्त हुई । वे कान्स्टेबल मुख्तियार अली सहित कुछ अधिकारियों/कर्मियों के साथ तुरन्त घटनास्थल पर गए । तब तक एक बड़ी भीड़ एकत्र हो गयी थी और झगड़ा हो रहा था, जिसमें बम, विभिन्न प्रकार अस्त्र और पत्थर फेंके जा रहे थे । उस क्षेत्र के लोगों को पागलपन हो रहा था क्योंकि बमों को छूटा जा रहा था और आग लगायी जा रही थी । श्री मेहता अपने जीवन को खतरे में डालकर घनी आबादी वाले क्षेत्र के अन्दर गए और स्थिति पर काबू पाने के लिए तथा लोगों के जीवन और सम्पत्ति की रक्षा करने के लिए गलियों में घुस गए । उन्होंने साहस के साथ उपद्रवियों का पीछा किया जो पुलिस पर अधाधुध बम फेंक रहे थे । वे 30/40 सशस्त्र उपद्रवियों के दल के सामने आ गए । भीड़ अधिक हिंसक और जान लेने पर उतारू थी । श्री मेहता ने अपने सुरक्षा गार्ड कान्स्टेबल मुख्तियार अली के साथ हिंसक भीड़ का बहादुरी से सामना किया तथा उन्हें आगे बढ़ने और उस क्षेत्र के भोले-भाले लोगों की हानि पहुंचाने में रोकने का साहसपूर्वक प्रयास किया । वे दोनों सब तक पीछे नहीं हटे जब तक सशस्त्र उपद्रवियों ने उन पर काबू नहीं पा लिया । असामंजस प्रवृत्ति की दंगामी भीड़ ने अत्यन्त ध्वंसनापूर्वक उनकी हत्या कर दी ।

श्री बी० के० मेहता, पुलिस उप-आयुक्त और श्री मुख्तियार अली, कान्स्टेबल, ने उत्कृष्ट वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

ये पदक राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 18 मार्च, 1984 में दिया जाएगा ।

सं० 113-प्रेज/84 राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नांकित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं—

अधिकारियों के नाम तथा पद

श्री सुरेन्द्र सिंह नेगी,  
पुलिस उप-अधीक्षक,  
एटा ।

श्री राम चरण सिंह,  
पुलिस निरीक्षक,  
अली गंज,  
एटा ।

श्री मुख्तियार सिंह,  
उप-निरीक्षक,  
थाना जैथरा,  
जिला एटा ।

श्री प्रह्लाद सिंह,  
हैड कान्स्टेबल,  
30वीं बाहिनी,  
बी० ए० सी०, गाँवा ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया ।

3 फरवरी, 1982, को नगला विजय, थाना जैथरा में शिवराज और उसके गिराई की उपस्थिति के बारे में सूचना प्राप्त हुई । श्री सुरेन्द्र सिंह नेगी, पुलिस उप-अधीक्षक ने पी० ए० सी० सहित उपलब्ध बल को एकत्र किया और तीन घंटों में विभाजित किया । उन्होंने मुख्य आक्रमणकारी दल का नेतृत्व करने का निर्णय किया और नगला विजय की ओर गए । श्री रामचरण सिंह, पुलिस निरीक्षक, श्री मुख्तियार सिंह, पुलिस उप-निरीक्षक और श्री प्रह्लाद सिंह, हैड कान्स्टेबल, मुख्य आक्रमणकारी दल में थे । जैसे ही मुख्य आक्रमणकारी दल गाँव नगला विजय पहुंचा आक्रुषों ने स्वचालित और अर्ध-स्वचालित हथियारों



से गोली चलायी और बम फेंकना आरम्भ कर दिया। पुलिस दल का दबाव बढ़ने के कारण डाकू नगला मकखन की ओर भागे। कुछ समय बाद जब डाकुओं को पुलिस दल की भारी और सख्त बेदी गोलीबारी का पुनः सामना करना पड़ा तो वे भागे और गांव लहरोरा में सरण ली। पुलिस दल भारी कठिनाइयों के बावजूब उनका पीछा करता रहा। अन्ततः डाकुओं ने गांव लहरोरा के टिकट गहू की खड़ी फसल के खेत में मोर्चा लगाया और अपने को दो दलों में विभाजित किया। श्री नेगी ने भी दो आक्रमणकारी दल बनाए और उनमें से एक का स्वयं नेतृत्व किया। अपने जीवन की परवाह न करते हुए और सभी विघातों से भारी गोलाबारी होने के बावजूब श्री नेगी और उनके दल ने 15-16 गज की दूरी से डाकुओं पर गोलियां चलाई और छः डाकुओं को मार डाला जिसमें उनका नेता शिवराज भी शामिल था।

इस मुठभेड़ में श्री सुरेश सिंह मैथी, पुलिस उप प्रभोषक, श्री रामचरण सिंह, पुलिस निरीक्षक, श्री मुख्तियार सिंह, पुलिस उप-निरीक्षक और श्री प्रह्लाद सिंह, हेड कांस्टेबल, ने उत्कृष्ट वीरता, साहस और उच्च कौटिकी कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

य पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता की दिनांक 3 फरवरी, 1982 से दिया जाएगा।

सु० नीलकण्ठ  
राष्ट्रपति का उप-सचिव

#### PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 12th November 1984

No. 108-Pres/84.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Tamil Nadu Police :—

Name and rank of the officer

Shri Arumugam Chockalingam,  
Sub-Inspector of Police,  
Ramanathapuram West District,  
Tamil Nadu.

Statement of services for which the decoration has been awarded

On the 31st August, 1981 (night) and in the early hours of the 1st September, 1981, the Inspector of Police, Sattur Police Station, organised a raid with a party consisting of Sub-Inspector Arumugam Chockalingam and others to arrest Marimuthu, a criminal. While the Inspector was combing Athipatti village along with his party, accused Marimuthu, who was hiding in the village, suddenly appeared from the north-eastern side of the village and ran in the direction of Mutharpatti village. Sub-Inspector Chockalingam chased the accused closely for a distance of about 3 kms. Accused Marimuthu suddenly turned back and attacked with an aruval inflicting a cut on his left side neck and shoulder blade. The accused again attacked the Sub-Inspector with the intention to kill him. At that time, Shri Chockalingam, unmindful of his personal injuries, opened fire with his revolver in self defence with the result Marimuthu fell down and died on the spot.

Shri Arumugam Chockalingam, Sub-Inspector of Police, thus exhibited conspicuous gallantry, exemplary courage, determination and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 1st September, 1981.

No. 109-Pres/84.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Delhi Police :—

Name and rank of the officer

Shri Kali Charan,  
Head Constable No. 560/W,  
Delhi.

Statement of services for which the decoration has been awarded

On the 21st November, 1983, Shri Kali Charan, Head Constable was on duty at Vishal Cinema in Delhi. He noticed that the Cashier of Vishal Cinema has been over-powered by two youngmen, one of them was carrying a revolver in his hand. Without caring for his life, Shri Kali Charan pounced upon him. The accused fired at him, but the round mis-fired. Head Constable Kali Charan continued to grapple with him despite the knowledge that there was imminent danger to his life. The criminal fired another round which in the process of grappling missed the Head Constable again. Shri Kali Charan did not lose presence of mind and with the help of another Policeman, was able to over-power both the criminals. Thus Head Constable Kali Charan not only saved the life of a civilian

but was also able to prevent an incident of day light robbery by the armed criminals.

Shri Kali Charan, Head Constable exhibited conspicuous gallantry exemplary courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 21st November, 1983.

No. 110-Pres/84.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Police :—

Name and rank of the officer

Shri Shambhu Shankar Thakur,  
Sub-Inspector of Police,  
Arrah, Nawada, Bihar.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 22nd July, 1982, at about 20.00 hours, Shri Shambhu Shankar Thakur, Sub-Inspector, while patrolling along with a Section of armed force, received information that a gang of dacoits was committing dacoity at Arrah main canal near Ananth Culvert. Shri Thakur along with his Section of armed force left the vehicle and proceeded on foot towards the canal in complete darkness. Within a few minutes, the Police Party approached the place where the dacoits were awaiting passers-by to indulge in their criminal acts. The dacoits were about 8 to 10 in number. The dacoits flashed their torchlight on Police Party and also enquired about their identity. Shri Shambhu Shankar Thakur, as leader of the Police Party, replied that they were none else but the police. On hearing this, the dacoits opened fire on the Police Party. Shri Thakur boldly accepted the challenge of the criminals and ordered his men to counterfire and thus there was an exchange of fire between the two sides. Shri Thakur faced the firing fearlessly and even took the revolver of his subordinate in his own possession and fired several rounds from it. As a result, dacoit Rajendra Ahir was shot dead on the spot, while the remaining started fleeing. Shri Thakur with the men chased the miscreants at the risk of their own lives and captured two more dacoits. One country-made fire arm, 2 cartridges and loot property were recovered from the dacoits.

In this encounter Shri Shambhu Shankar Thakur, Sub-Inspector, exhibited conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 22nd July, 1982.

No. 111-Pres/84.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Assam Police :—

Name and rank of the officer

Shri Uday Das,  
UB Constable No. 380,  
Executive Force,  
Goalpara District,  
Assam.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 4th March, 1984, at about 8.00 A.M. information was received at Bongaigaon Police Station that a RPSF Rakshak in full uniform with a rifle and ammunition was creating panic and terror by firing indiscriminately from inside the Mahabirasthan Mandir in Bongaigaon Town where a crowd of devotees had gathered for taking out a procession. Shri Birendra Kumar Hazarika, Sub-Inspector, Bongaigaon Police Station, along with six Police officers/men (including Constable Uday Das) rushed to the spot. The police party learnt from the fleeing passersby that the RPSF Rakshak had run amuck and only Shri Ram Narain Yadav, Care-taker of the Temple, could approach him, and that the Rakshak might react violently at the sight of the police party. As per orders of Sub-Inspector Hazarika, Constable Uday Das took off his uniform and worn civil dress and cautiously approached the RPSF Rakshak keeping an eye on him all the time. The Rakshak who had already fired several rounds indiscriminately on the crowd, came out of the Temple and fired another round in the air and took position behind a dump of bricks in the compound of the temple. On the other side Sub-Inspector Hazarika along with his men had already taken position. Shri Uday Das approached the Rakshak from behind. He noticed that the Rakshak had unbolted his rifle and was trying to reload it. Shri Uday Das with great presence of mind gave a signal to the police party waiting in ambush and he himself flung on the Rakshak and grabbed him. The Rakshak fell on the ground and was immediately over-powered by the other policemen led by Shri Hazarika. The RPSF Rakshak was then taken into custody and a .303 rifle (Mark IV) with 18 Nos. of live cartridges, 5 empty cartridges along with 5 charger clips were recovered from his possession. The RPSF Rakshak was later identified as Brajbilash Pandey of 'A' Coy., 4 Bn., RPSF.

Shri Uday Das, Constable, thus displayed conspicuous gallantry, exemplary courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowances admissible under rule 5, with effect from the 4th March, 1984.

No. 112-Pres[84].—The President is pleased to award the President's Police Medal for gallantry to the undermentioned officers of the West Bengal Police :—

Names and rank of the officers

Shri V. K. Mehta (Posthumous)  
Deputy Commissioner of Police,  
Port Division,  
Calcutta.

Shri Mukhtar Ali, (Posthumous)  
Constable No. 17979,  
Port Division,  
Calcutta.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 18th March, 1984, Shri V. K. Mehta, Deputy Commissioner of Police received information of a serious disturbance of communal nature in Fatehpur-Ramnagar area under Police Station Garden Reach. He rushed to the spot with a handful of officers/men including Constable Mukhtar Ali. A large crowd had by then gathered and was involved in a clash by hurling of bombs, different types of missiles and brickbattng. People of that area were in frenzy as houses were being ransacked, looted and set on fire. Shri Mehta went inside the thickly populated area and entered into the lanes in order to control the situation and save lives and property of the people at a great risk to his life. He chased the miscreants who were desperately

charging bombs aiming at the police. He stood up against a group of 30/40 armed miscreants. The crowd had become more violent and murderous. Shri Mehta accompanied by his security guard Constable Mukhtar Ali faced the violent mob bravely and courageously trying their best to prevent them to proceed further and cause harm to the innocent people of the locality. Both of them did not retreat till they were over-powered by the armed miscreants. They were slain in a most brutal manner by the riotous mob of anti-social elements.

Shri V. K. Mehta, Deputy Commissioner of Police and Shri Mukhtar Ali, Constable exhibited conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the President's Police Medal and consequently carry with them the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 18th March, 1984.

No. 113-Pres[84].—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officers of the Uttar Pradesh Police :—

Names and rank of the officers

Shri Surendra Singh Negi,  
Deputy Supdt. of Police, Etah.

Shri Ram Charan Singh,  
Inspector of Police, Aliganj, Etah.

Shri Mukhtiyar Singh,  
Sub-Inspector, Jaithra.

Shri Prahlad Singh,  
Head Constable,  
PAC, 30 Bn., Gonda.

Statement of services for which the decoration has been awarded

On the 31st February, 1982, information was received about the presence of Shiv Raj and his gang at Nagla Vijai Police Station, Jaithra. Shri Surendra Singh Negi, Deputy Supdt. of Police, collected the available force including PAC and divided it into three parties. He decided to lead the main assault party and proceeded towards Nagla Vijai. Shri Ram Charan Singh, Inspector of Police, Shri Mukhtiyar Singh, Sub-Inspector of Police and Shri Prahlad Singh, Head Constable, were in the main assault party. As soon as the main assault party reached village Nagla Vijai, the dacoits opened fire with automatic and semi-automatic weapons and bombs. Due to mounting pressure of the Police party the dacoits ran towards Nagla Makhan. After some time when the dacoits again encountered heavy and accurate fire from the police party, they ran and took refuge in village Lahchora. The Police parties continued the pursuit against heavy odds. Ultimately the dacoits took position in a field of standing wheat crop near village Lahchora and divided themselves into two groups. Shri Negi also formed two assault parties and led himself one of them. In total disregard to their personal safety and in spite of the heavy fire coming from all directions, Shri Negi and his party charged at the dacoits from a distance of 15-16 yards and shot dead six dacoits including the gang leader Shiv Raj.

In this encounter Shri Surendra Singh Negi, Deputy Supdt. of Police, Shri Ram Charan Singh, Inspector of Police, Shri Mukhtiyar Singh, Sub-Inspector of Police and Shri Prahlad Singh, Head Constable, exhibited conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carry with them the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 3rd February, 1982.

S. NILAKANTAN  
Deputy Secretary to the President